YOUNG INDIA

TRADE MARK
ELECTRICAL RECORDING

BL
23/8

यंग इंडिया

"गोपाल कृष्ण"

"प्रभात" हिन्दी चित्रपटके
सुश्राव्य व संग्राह्य रेकॉर्डस्.

THE NATIONAL GRAMOPHONE RECORD MFG. CO. LTD.

110, Medows Street, Fort, BOMBAY.

TRADE MARK
ELECTRICAL RECORDING
YOUNG INDIA

प्रभात स्पेशियल लेबल....रु. २-४-०

प्रभात फिल्म कं० (पुना)

"गोपाल कृष्ण"

'गोपाल कृष्ण' के गानों की विशेषता :—

'प्रभात' के इस संगीत-पधान चित्रपट के गानें, संगीत और साहि
की दृष्टि से लिये गये हैं। इस अप्रतिम कृति के गाने कर्णप्रिय ए
चित्ताकर्षक सिद्ध हुए हैं।

इस चित्रपट के निर्माता 'तुकाराम' जैसी जग-प्रसिद्ध कृति
दिग्दर्शक श्रीयुत दामले और श्रीयुत फत्तेलालजी हैं। 'तुकाराम'
अभंग और काव्यों की लोक-प्रियता देखते हुए मालूम होता है कि
'गोपाल कृष्ण' के सुमधुर गाने और गोपाल की बंसी की सुरीली ध्वनि
रसिकों के हृदय को आल्हादित किये बिना नहीं रहेगी।

संगीत नियोजक संगीत कलानिधि मा. कृष्णराव

आप सिद्ध हस्त संगीत नियोजक, वादक लेखक और गायक हैं।
आपके सहयोग से **'गोपाल-कृष्ण'** के गानों में रोचकता एवं माधुर्य
की मात्रा पूरेपूरी आगई है। आपने **'प्रभात'** के **धर्मात्मा, अमरज्योति,**
और **'वहाँ'** जैसे प्राणवान् पिक्चरों को अपनी संगीत कला द्वारा
खूब सजाया है। आप कलाके पुजारी हैं और आपका हृदय कला-मय
है। इस **'गोपाल-कृष्ण'** का संगीत भी आपही की कलाका एक नमूना है।

आपकी रचना, वाद्ययोजना, नविनता और स्वरों की स्वतंत्रता का परिचय आपको **'प्रभात'** के अन्य रेकर्डों द्वारा मिल ही गया है।

'गोपाल-कृष्ण' के गानों को विविध तर्ज़ों के सांचे में ढालकर, विभिन्न वाद्यों का साथ देकर अत्यंत मनोहर बनाया है।

आपके नेत्रत्व में संचालित होता हुआ **'प्रभात'** का ओरकेस्ट्रा, श्रीयुत **बलवंतराव** रुकडीकर और श्रीयुत राजारामबापू पुरोहित जैसे सिद्धहस्त वादन-विशारदों से भरपडा है।

काव्य-रचना, भावना और स्वर-नियोजना का पूर्ण परिच, आपको **'गोपाल-कृष्ण'** के गानों से मिल सकता है।

इन गानों के अनुवादक-हिन्दी के सुप्रसिद्ध विव्दान पंडित श्रीवास्तवजी **'अनुज'** हैं। आप यह पहिली बार ही **'प्रभात'** के झंडे के नीचे चमक रहे हैं। आपने भावना के साथ ही साथ सरल भाषा का स्त्रोत भी खूब बहाया है। आपने **'गोपाल-कृष्ण'** के गानों को चित्ताकर्षक बनाने में काफी कोशिश की है।

गानेवाली त्रीमूर्ति :—

शांता आपटे, मा. परशराम और **राम मराठे,** इस त्रीमूर्ति ने **गोपाल** कृष्ण के गानों को अपनी मन-मोहिनी आवाज से गाकर पूरा प्रभाव डाला है। **'शांता आपटे'** के गानों के विषय में अधिक लिखना और **'प्रभात'** के पिक्चर की अच्छाई के लिए अपना मत प्रगट करना दोनों बराबर हैं। आप भारतवर्ष के हर कोने में प्रख्यात हैं। सिनेमा-सृष्टि में अपने मीठे गानों के ज़रिये ख्याति-प्राप्त करने वाले बाल-गायक **'राम मराठे'** को **प्रभातने** पूर्ण-प्रकाश में लाकर रक्खा है। तील-स्वर के साथ खेलनेवाले इस बाल-गायक ने **गोपाल** कृष्ण के गानों को बड़ी खूबीसे गाया है और विश्वास है कि उनके गाने लोक-प्रिय सिद्ध होंगे।

'दुनिया-न-माने' इसमें **भिखारी मा. परशराम** ने अपने एक ही

गानेके द्वारा समस्त भारत-वर्ष में अपनी गायन कलाकी सौरभ फैला दी है। 'गोपाल कृष्ण' मे आपके दो गाने हैं और वे दोनों निराली तर्ज़ में गाये गये हैं। इन गानों की शब्द योजना भी खास आकर्षक और 'पेंद्या' के मुंह से फबने वाली की गई है। आपके इन दोनों गानों का, आसर उनके उस एक लोकप्रिय गाने की अपेक्षा दुगुना होगा, बल्कि यह गाने लोगों के दिलमें घर कर लेंगे।

गोपाल कृष्ण के संगीतमें बन्सीको महत्वका स्थान है रेकॉर्डमे बन्सी वाजंत्र पुनाके **श्री के. एस. बर्वे** इन्होंने किया हैं. **श्री. बर्वे** यह शिक्षकका व्यवसाय करते हुये पुनेमे '**आयडियल इंग्लीश स्कूल**' नामकी संस्था इन्होंने बडी मेहनतसे चलाया हैं. फ्ल्यूट वाजंत्र यह इनका बहोतही प्यारा विषय हैं अयसा होते हुये भी फ्ल्यूट वाजंत्रमे इनका कौशल्य सिफारस करेनेके काबील हैं **इनके** इस कौशल्यका फायदा **'प्रभात'** ने **गोपाल-कृष्ण** के संगीतमे बहोत अच्छी रितीसे उठाया हैं **'बचपनका याद आया'** ईन संगीतमे बन्सीकी सुरीली चाल **श्री. बर्वे** इन्होंने बजाया हैं जिससे वह काबीले कद्र हुई हैं।

———o———

"गोपाल कृष्ण"

Shanta Apte. शांता आपटे.

राधा :—

M.P. 556 / एम्.पी. ५५६ } "सर सर सरवत पयकी धारा" / "बचपनका याद आया"

(१)

"सर सर सरवत पयकी धारा"

काव्य अनुवादक :—**पंडित श्रीवास्तव 'अनुज'**।

म्युजिक डाइरेक्टर :—**मा. कृष्णराव**।

यह काव्य गोकुल के नन्दन बन का वातावरण नेत्रों के आगे खड़ा कर देता है। प्रातःकाल में गाय दूहते हुए राधा ने यह गाना गाया है। गाय के स्तनों से बहती हुई दुग्ध धाराओं की 'सर सर' की ध्वनि ने राधा के हृदय में नविन स्फूर्ति भर दी है और इसी ध्वनि में तल्लीन होकर राधाने उपरोक्त गाना गाया है। सारंगी और फिडल की सहायता से शब्दों को ध्वनि का मेल देकर गाने के प्रारंभ को हृदयवेधक बनाया गया है। गौ दोहन का प्रसंग और गोकुल-निवासियों के मंगल-मय जीवन की झलक का परिचय देकर यह काव्य अच्छा प्रभाव डालता है।

यह गाना **शांता आपटे** ने अपने मधुर स्वर में गा कर सोना और सुगंध की कहावत को चरितार्थ किया है।

इस गाने के साथ बजाये जानेवाले वाद्यों में **'तबले'** का **उपयोग**, अधिक ध्यान देने योग्य किया गया है। "घर घर घर घर छाय उजारा" इस चरण पर तबले का आरंभ उत्तम मुखड़े से होता है और "प्रमुदित मन तब होत हमारा" इस चरण पर भिन्न भिन्न प्रकार से बजते

हुए तबले के ताल को सुनकर, श्रोता का हृदय आनंद से ओत-प्रोत हो जाएगा।

एक तरफ :—

राधा :—

सर सर सरवत पयकी धारा।
प्यारी प्यारी गाय दुधारी—
घर घर घर घर छाय उजारा॥
हराभरा है गोकुल सारा॥
तीन लोकसे यह है न्यारा॥
तनमनधन सब हमने वारा॥
गोप गोपीका आसरा॥
हरिकी मुरली मृदु जब बाजे॥
प्रमुदित मन तब होत हमारा॥

"बचपनका याद आया"

म्युजिक डाइरेक्टर :—**मा. कृष्णराव।**
काव्य अनुवादक :—**पंडित श्रीवास्तव 'अनुज'।**

गोपाल की मधुर-मुरली की तान पर समस्त-विश्व मोहित था और राधा का हृदय तो उस तान-की तरंगों में डूबा हुआ था। यह थी राधा की अटल-भक्ति और अनोखा प्रेम।

उपरोक्त गाना भी मुरली की सुरली आवाज का ही कारण माना जा सकता है।

"यदि मैं भी कृष्ण जितनी छोटी होती तो नित्य प्रति उनके साथ खेलती कूदती और निःशंक होकर रात दिन बंसी सुना करती। इस प्रकार की कल्पना करते हुए राधाने यह गाना गाया है।

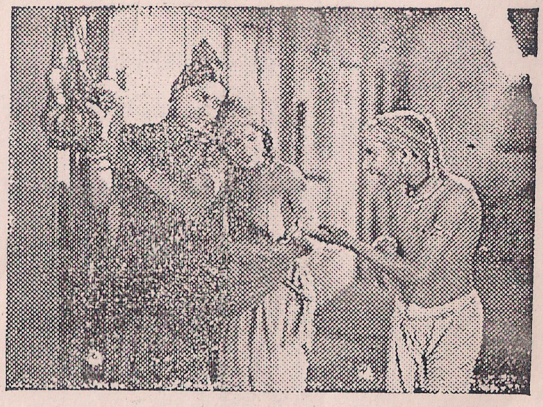

भावना मय भाषा, सीधी-सादी तर्ज और उसमें कहीं कहीं बज उठने वाली बंसी की ध्वनि जन मन पर जादू का असर करेगी यह तर्ज़ इतनी आकर्षक और उम्दा बनाई गई हैं कि एकबार के सुनने पर भी लोग उसे भूल नहीं सकते। चित्रपटमें इस मुरली की धुन सुनकर गायें आजातीं हैं। इस गानेमें मुरली की मधूर गत श्री. बर्वेने अपूर्व सफळता पूर्वक बजाई है इसी प्रकार से यह रेकार्ड सुननेवालों का हृदय मोहित होजाता है।

दुसरी तरफ :—

राधा :— बचपनका याद आया
भूला हुआ ज़माना।
गातेथे जबकि मिलकर
सुखचैन का तरा ना।
जीवनका है तू साथी
है धन्यभाग मेरा।
अब एक बार मोहन !
मुरली ज़रा बजाना।
गोपोंका है तू प्यारा
गोधनका है सहारा।
नूतनसी एक ज्योती
मेरे लिये जगाना।

———o———

S anta Apte. शांता आपटे.

M. P. 558 / एम्. पी. ५५८

राधाः —
"कान्हा सबको मोहे"

कृष्ण :—
"गुजरीया दे दधि दान"

म्युजिक डाइरेक्टर :—मा. कृष्णराव ।

काव्य अनुवादक :—पंडित श्रीवास्तव 'अनुज' ।

"कान्हा सबको मोहे"

घनश्याम-कृष्ण की पवित्र-मूर्ति के सन्निकर बैठकर, अपनी अन्यन भक्ति द्वारा, राधा उन्हें प्रार्थना करती है । यह प्रसंग इस गाने के समय का है । प्रार्थना की पवित्रता गंभीरता और आर्तनाद का ओज गाने की पंक्तियों से टपकता हैं । शब्द योजना अत्यंत उत्कृष्ट होने से, यह प्रार्थना हरेक के मन पर अच्छा असर करती है ।

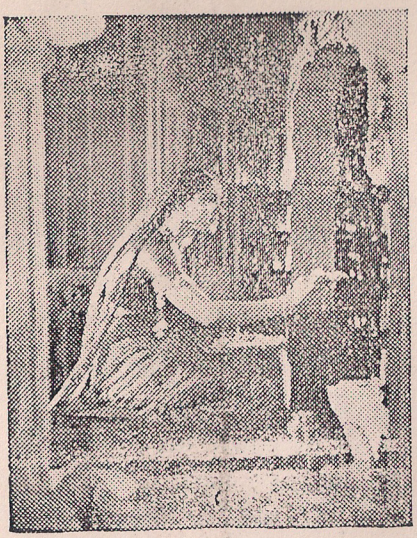

"लीलाधर मनहर घनश्याम, ब्रह्मनिरामय तुम साकार ।"

इन पंक्तियों के बार में इनके अर्थ के अनुकुल होनेवाले दृश्य दिखाई पड़ते हैं । इससे गानेवाले का प्रभाव दुगुना हो जाता हैं । रेकर्डों में इन दृश्यों का अभाव है । तथापि यह प्रार्थना सुनते ही सुननेवाले डोल जाते हैं और अपने को दिव्य-सात्विक-वातावरण में होने का अनुभव करते हैं ।

शांता आपटे ने यह गाना इतनी एकाग्रता और भावना के साथ गाया है मानो राधा स्वयं ही कृष्ण की प्रार्थना कर रही है ।

एक तरफः—

राधा :—

कान्हा सबको मोहे,
मंगलरूप तुह्मारा ॥
लीलाधर मनहर घनश्याम !
ब्रह्म निरामय तुम साकार !
कुसुमकलीसेभी सुकुमार !
मुग्ध हआ मन मेरा ! ॥
कृपा करो । पाप हरो
बिनसहु माँया—
पावन कर जग सारा ॥

———o———

Ram Marathe. **राम मराठे.**

कृष्ण :—

म्युजिक डाइरेक्टर :—**मा. कृष्णराव** ।
काव्य अनुवादक :—**पंडित श्रीवास्तव अनुज'** ।

" गुजरीया दे दधि दान "

'गोपाल कृष्ण' का यह पहिला ही गाना खास ध्यान में रखने योग्य है । दूध दहीं के मटके भरकर मथुरा के बाजार को जातीं हुई ग्वालिनों

को ठहराकर, उनसे दही दूध और मक्खन लेकर खाते हैं और अपनी बाल लीला से ग्वालिनों का मनोरंजन कर उन्हें हँसाते हैं—खुश करते हैं। ग्वालिनों को भी कृष्ण की यह हरकतें और विशुद्ध-प्रेम अच्छा मालूम होता है और कृष्ण को बुलाबुला कर कोई दूध तो कोई मक्खन 'दान' करती हुई आनंद मनाती हैं।

गाने में कुछ चरण कृष्ण के और कुछ चरण ग्वालिकाओं के होने से इनका स्वरूप संवादात्मक हुआ है और विचित्रता भी आगई है। तर्ज़ की मीठी धुन, कृष्ण के हँसने की किलोलें और स्वर योजना प्रसंग को अनुकुल होनेवाली काव्य रचना होने से सुननेवाले को **कृष्ण मा० राम मराठे** का यह गाना गोकुल के वातावरण का भास करा देता है।

यह गाना **राम मराठे** ने अच्छी धुन में गाया है।

ग्वालिनों के पैरोंके नूपुर की ध्वनि का आभास निर्माण करने में संगीत-दिग्दर्शकने आपना अच्छा कौशल दिखलाया है। गाना पूरा होने के बाद केवल तर्ज़ ही बजती है उसका काफी असर होती है। गाना पूरा होने पर भी ग्वालिनों के दूध दहीं लेकर त्वरिता से जाने का दृश्य आखों में नांचा करता है और मीठी धुन कानों में गूंजा करती है।

दुसरी तरफ :—

कृष्ण :—

"गुजरीया ! गुजरीया ! गुजरीया ! गुजरीया !
दे दधि दान, दे दधि दान ॥
भर भर डार, गोरसधार
मधुसम मनभर दे दो दे दधि दान ॥

१ गोपी :—आओ ! चखवाऊँ माखन मोहन !

२ गोपी :—तुमपर वारुँ सब तन मन धन !
ग्वालिनी ! अब तू, मोहिनी अब तू
तज अभिमान, दे दधिदान ॥

———०———

Shanta Apte. शांता आपटे.

राधा :—

M. P. 555 } "ग्रास ये प्रीतिका"
एम. पी. ५५५ } "मोदमयी ये कपिला गाय सजाऊँ"

"ग्रास"

म्युजिक डाइरेक्टर :—**मा० कृष्णराव** ।
काव्य अनुवादक :—**पंडित श्रीवास्तव 'अनुज'** ।

गोपाल कृष्ण' के संगीत का यह सब से अच्छा और रुचिकर गाना है। कृष्ण में माता-का वात्सल्य-प्रेम भरते हुए राधा ने यह गाना गाया गया है। सीधी तर्ज होते हुए भी धरेलू उच्च भांवना से भरा हुआ यह गाना मन को प्रफुल्लित कर देती है।

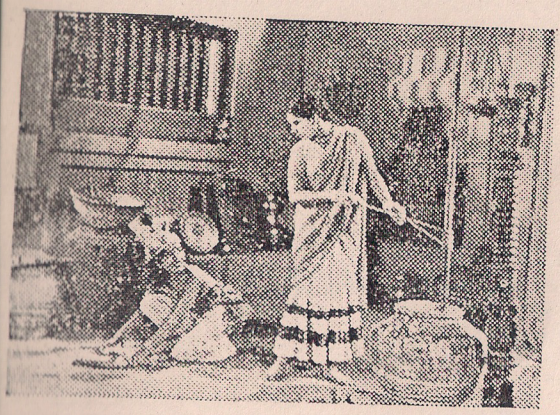

सिवाय सतार की झनकार के इस गाने के साथ किसी भी वाद्य का उपयोग नहीं किया गया है तथापि यह गाना अपने ढंग का अनूठा और असर करनेवाला सिद्ध हुआ है। कृष्ण को 'सांवरे'-'सांवरे' कहकर राधा उनमें वात्सल्य भाव झर रही है। इस प्रसंगकी ओर दृष्टि डालने से, इस गाने की रोचकता हजार गुनी बढ़जाती है। "**यह चिड़ियाका यह मुरवाका**"।

ग्रास देते हुए राधा कहती है

"**यह सब से मीठा अपनी "कपिला" का**" यह चरण सुनते ही हरेक को अपने अपने दिलमें 'गोकुल-निवासी' होने का भास हो जाती है। कृष्ण और राधा की, कपिला के साथ प्रीति देखकर यह कल्पना आपके हृदय में भी उठ खडी होगी और आप अपने सामने 'कपिला' को खडी हुई देखने का ध्यान कर लेंगे। भावना की दृष्टि से यह **ग्रास-गीत** उच्च कोटि का माना जायगा।

शांता आपटे की गाने की शैली से और वाद्य रहित गाया हुआ गाना प्रत्येक घर में प्रिय हो जाएगा।

एक तरफ :—

राधा :—

ग्रास ये प्रीतिका
मोदसे खाले।
सांवरे हांसके
जगको हंसा दे।
यह चिड़ियाका
यह मुरवाका
यह सबसे मीठा
अपनी 'कपिला' का
ग्रास यह प्रीतिका
मुखमें तुरत लो।
दिव्य वह विराटरूप
मुझको दिखादो।
सुरस मधुर कैसा
एक ग्रास खाओ।
हर्षसे गोकुलको शान्ति दिलाओ।

" मोदमयी ये 'कपिला' गाय सजाऊँ "

म्युज़िक डाइरेक्टर :—**मा. कृष्णराव ।**

काव्य अनुवादक :—**पंडित श्रीवास्तव 'अनुज' ।**

गोवर्धन के मंगल उत्सव के उत्साह में समस्त गोकुल आनंद-मग्न था ।

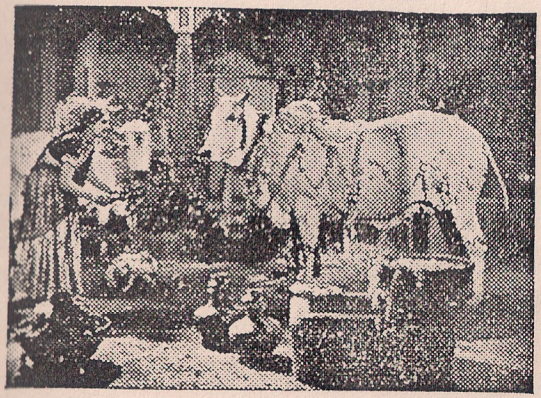

राधा भी अपनी कपिला को सजाने में तन्मय थी। उस समय वह अत्यंत आनंद में आकर चंचलता से यह गाना गाती है ।

उत्सव में जाने की शीघ्रता, उत्साह आनंद औरअधीरता से राधाने गायका सर्वोत्तम-वर्णन करते हुए यह गाना गाया है । अतः इस गाने में काफी रोचकता आगई है ।

शृंगार का काव्य-मय वर्णन, उत्तम धुन और वाद्यों का पूरा पूरा साथ होने से यह गाना बार बार सुनने को जी चाहता हैं.।

" ललाटपें केसरका तिलक लगाऊँ "
" परिमलमय फूलोंका मनहर गजरा "
' कँचनकी सींगोंपर कान्ति लसाऊँ "

इत्यादि काव्य पंक्तियों ने काव्य के महत्व को बढा दिया है .

दुसरी तरफ :—

राधा :—

मोरमयी ये कपिला गाय सजाउँ ॥
मनहरनी अतिसुन्दर–नवला नारि बनाऊँ ॥
ललाटपे केसरका
तिलक लगाऊँ ।
पग घुंगरु छुम छुम छुन
बाजे पिन्हाऊँ ॥
परिमलमय फूलोंका
मनहर गजरा ।
कँचनकी सींगोंपर कान्ति लसाऊँ ॥

———o———

Parshuram. परशुराम.

पेंद्या :—

MP 559 } "तुम ब्रजके दुलारे"
एम्.पी. ५५९ } "रत्नों जैसी गऊवें"

म्युजिक डाइरेक्टर :—मा. कृष्णराव ।

काव्य अनुवादक :—पंडित श्रीवास्तव 'अनुज' ।

"तुम ब्रजके दुलारे—मोहनपे जाऊं वारी वारी".

कृष्णके अनन्य भकतोंमें उनके बालमित्र पेंद्याकी बराबरी कोई नहीं कर सकता. कृष्णके न होने से गउवोंको भी ठीक देखभाल नहीं कर सकताथा. कृष्ण के साथी कहेलाते हुअे भी उसमे कोई गुण न आया इस कल्पनासे वो रोता था. कृष्ण उसे मनाता है फीरभी शान्त नहीं होता तब कृष्णने कहा "पेंद्या" तुझे कृष्ण पर जरा भी माया

नहीं है क्या ?" ईस बातसे पेंद्या के हृदय में मर्माघात होता है और वह कहता है. "कृष्ण" हनुमानजीके हृदय में जैसा राम थे वैसेही तुम मेरी छातीमें हो तुम मुझे सर्वत्र दिखाई देते हो. "यह कहता हुवा पेंद्या उपरोक्त गाना गाने लगता है. कृष्ण पर अपना प्रेम और अनन्य श्रद्धाकी भावनासे भरा हुआ यह गाना पेंद्या–**मा. परशराम** ऐसी खुबीसे गाता है की सुनने वालेका हृदय डोलने लगता है.

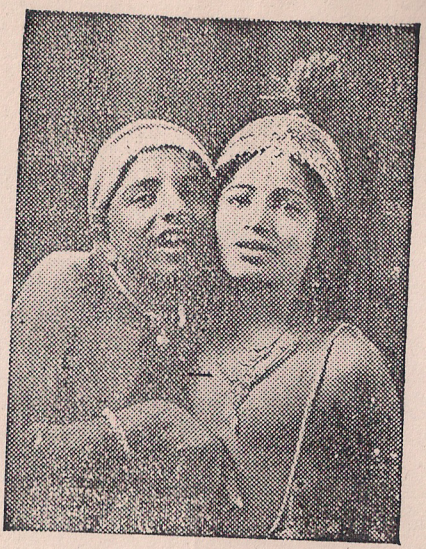

गानेकी रचना उत्तम होते हुअे पेंद्याके मुहसे शोभने वाली है **"कहुं-ग्वाल बाल बने, कहुं प्रतिपाल बने"** यह पंक्तिया बडी रोचक है **"तेरो अन्त नहीं पाया तोरी लीला बलिहारी"** यह अन्तीम पदकी भावनाही गजब नाक असर करने वाली है. **"जमुनाके जलमें"** यह चरण कहेने के बाद यमुनाके गहेरे जलकी भयानकता बताने के लीये वाद्य योजना अधिक ध्यान देने योग्यकी गई है.

गायक **मा. परशरामनें "दुनीया-न-माने"** में जनताको अपनी कलाका काफी परिचय दे दीया है अतः यहां अब उनके विषयमें अधिक लीखनेकी आवश्यकता ही नहीं है.

एक तरफ :—

पेंद्या :—

तुम ब्रजके दुलारे-मोहनपे जाऊं वारी वारी ।
मेरे मोहनकी लीला है न्यारी ।

छबि तेरी न्यारी है मुरारी ॥
कहूं ग्वाल बाल बने । कहूं प्रतिपाल बने
नटवर छलिया भारी ॥
जमुनाके जलमें । गोपालोंके दलमें
सबमें समाया ॥
तेरा अन्त नहीं पाया
तेरी लीला बलिहारी ॥

———o———

"रत्नों जैसी गउवें"

म्युजिक डाइरेक्टर:—**मा. कृष्णराव.**
काव्य अनुवादक:—**पंडित श्रीवास्तव 'अनुज'**

पेंद्या गोशालामें काम करते हुए गौवांको चारापानी देते हुए पेंद्याने उपयोक्त गाना गाया हैं. हमारी गौवां रत्नोसे भी मूल्यवान हैं और उनका हम-पर कितना निर्मल और निष्कपट प्रेम है. पेंद्या के यह विचार गानेके रुप में प्रगट होता हैं ।

"**रम्भति फाँदती ये**" इस पुकारकी दिल पुकारकी उत्तम कवियोजना और **मा. परशराम** जैसे सर्वोत्तम गायकके मीठे कंठकी सुरली आवाजका मेल वास्तव में हृदय वेधक बन जाता है. यह गाना अवश्य दुसरे गानोके मुकाबीलही लोकप्रिय होगा. इस गानेमें

"**रम्भती**" यह चरन मुहसे सीटीकी आवाज निकालकर बजाया है यह एक बडी भारी विशेषता है ।

दुसरी तरफ :—

पेंद्या :—

रत्नों जैसी गउवें शान ।
सोहती ये मेरी ॥
कूदति खेलति ये !
रम्भति फँदति ये ।
ये धवरी ... ये कबरी ।
भोली भाली— हमसे हैं करती
निर्मल प्रीत अती ॥

———o———

Ram Marathe. **राम मराठे.**

कृष्ण :—

M.P. 557 } "तू मेरी मैय्या"
एम्.पी. ५५७ } "निर्धनका तू है धन"

म्युजिक डाइरेक्टर :—**मा. कृष्णराव.**
काव्य अनुवादक :—**पंडित श्रीवास्तव 'अनुज'**

"तू मेरी मैय्या"

गोपाल कृष्ण में उत्तम दजका यह गाना उतारा हुवा है. नंद व यशोदा को कृष्णके सच्चे स्वरुपका नेद न लगनेसे **नंद** कृष्णसे पुछते है "सच कहो **कृष्ण तुम कोन हो ?**" उसका जवाब कृष्णने इस गानेमें दिया हैं.

मोहक और मधुर तर्जमें **राम मराठे** ने सुरली आवाज में गाया है.

गोपाल कृष्ण के दुसरे गाने से यह गाना **राम मराठे** अधिक मधुरता और नये ढंगसे गाता है अयसा मालुम होता है. अयसाही अन्य गानोंसे है गानेमें वाजंत्र का संमील्लन अधिक उठावदार हुवा हय ।

एक तरफ :—

कृष्ण :—

तू मेरी मैया—मैं लाल तेरा

लो पहचान ॥

नन्द मेरे पिता गोपसखा

मधुर वचन मैं कहता ॥

जमुना किनारे गऊवें चराऊँ ।

बन्सी बजाऊँ गोपी नचाऊँ ।

झांजे झनन नन । बाजे खनन नन ।

डगर डगर मैं फिरता ॥

"निर्धनका तू है धन"

पुजिक डाइरेक्टर :—मा. कृष्णराव.
व्य अनुवादक :—पंडित श्रीवास्तव 'अनुज'

गोधन याने श्रीकृष्णका जीवन! सोनेसे पेशतर अपने प्यारे गऊवें और बैलोंको चारा देकर उन्हे प्रेमसे खेलाना और उनका संदेश लेनेका कृष्णका नित्य क्रमही था. अयसे वख्तपर उन्होने गाया हुवा यह गोमाताका गुण गान हैं.

सीधी साधी और शांत अयसी तर्ज यह गानेको अधिक शोभास्पद बनाती है. गउवोंका गलेका घंटेका आवाज वाजंत्रोके साथ रखा हुवा है. छोटा, बडा, धनवान और निर्धन ईन सबपर छाया रखनेवाली गोमाता मनुष्यका जीवन और उसके सुखकी खान हैं. ईतनाही नहीं किन्तु सब मनुष्योंको समदृष्टिसे अपना अमृत जैसा दूध देनेवाली गोमाताका स्मरणही मनुष्योंके लीये श्रेष्ठ हैं. यह भावार्थ दिखाता हुवा यह गाना कृष्णके मुखसे सुननेसे गोमाता प्रतीकी अपनी भावना अधिक बढ जायगी.

दुसरी तरफ :—

कृष्ण :—

निर्धनका तू है धन
व्रजकी तू हरियालि ।

निर्बलका तू है बल
अनुपम शोभावाली।
तुझसे है गोमाता।
धरती रे उजियाली।
राव रंक सब समान।
दुष्ट सुजन कुछ न जान।
देकर पय अमृतमय।
करती है रखवाली॥

TRADE MARK
ELECTRICAL RECORDING
YOUNG INDIA

धी नॅशनल ग्रामोफोन रेकॉर्ड मॅन्युफॅक्चरिंग कं. लिमिटेड.

११०, मेडोज स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई १.

फॅक्टरी:—शीवरी क्रॉस रोड,
वडाळा, बम्बई.

टेलीफोन नं:—२५१८१
टेलीग्राम:—Tansen

Kothari P. Press, Bombay, 1.